किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार...

डॉ. विजय सुखवानी
लेखक, मोटिवेशनल स्पीकर
v1sukhwani@gmail.com

हिंदी फिल्म संगीत के इतिहास में जब भी सबसे लोकप्रिय संगीतकारों का ज़िक्र होगा तो शंकर जयकिशन का नाम सबसे ऊपर लिखा जायेगा, हिंदी फिल्म संगीत के इतिहास में यदि किसी संगीतकार जोड़ी ने कलात्मकता, लोकप्रियता और निरंतरता, इन तीनों पक्षो में अपनी महारत दर्शाई तो वह शंकर जयकिशन की जोड़ी थी.

हिंदी फ़िल्म संगीत के स्वर्ण काल (1950 और 60 का दशक) में इस जोड़ी ने न केवल अविस्मरणीय लोकप्रिय संगीत दिया, बल्कि अपनी अनूठी शैली से फ़िल्म संगीत की तस्वीर को बदल के रख दिया. शंकर जयकिशन की जोड़ी ने फ़िल्म संगीत की धुनों को केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक अनुभव बना दिया.उनकी धुनों में भारतीय शास्त्रीयता, लोक-संवेदना और पाश्चात्य ऑर्केस्ट्रेशन का अद्भुत मेल दिखाई देता है.

शंकर जयकिशन की जोड़ी में शंकर सिंह रघुवंशी और जयकिशन दयाभाई पंचाल शामिल थे. शंकर सिंह रघुवंशी हैदराबाद से थे और तबला वादन में निपुण थे, जयकिशन दयाभाई पंचाल गुजरात के थे और हारमोनियम बजाने में माहिर थे, दोनों की मुलाकात मुंबई में संघर्ष के दिनों में हुई. शंकर के मित्र दत्ताराम जो बाद में स्वयं स्वतंत्र संगीतकार बने, फ़िल्मों में काम दिलाने के लिए शंकर को एक गुजराती फ़िल्म-निर्देशक चन्द्रवदन भट्ट के पास ले गए. वहीं इंतज़ार के क्षणों में शंकर की मुलाकात जयकिशन से हुई, जो स्वयं भी काम की तलाश में आए हुए थे. दोनों की संगीत-समझ अलग थी, पर लक्ष्य एक ही था, संगीतकार बनना. इसी मुलाक़ात के चलते शंकर और जयकिशन की जोड़ी बनी और वो इतनी अधिक लोकप्रिय हुई कि भारतीय फ़िल्म संगीत के इतिहास का सुनहरा अध्याय साबित हुई.

प्रसिद्ध फिल्मकार राज कपूर का संरक्षण इनके करियर का निर्णायक मोड़ बना, राज कपूर ने इनकी प्रतिभा को पहचाना और अपनी फिल्म 'बरसात' (1949) में इन्हें संगीत देने का मौका दिया, जो एक ब्लॉकबस्टर साबित हुई. इस फिल्म के संगीत ने रातों-रात धूम मचा दी. 'हवा में उड़ता जाए' और 'बरसात में हमसे मिले तुम' 'जिया बेक़रार है', 'पतली कमर है' जैसे गानों ने पूरे देश को झूमने पर मजबूर कर दिया. यहीं से शंकर-जयकिशन और राज कपूर की वह तिकड़ी बनी जो हिंदी सिनेमा की

सबसे ऐतिहासिक रचनात्मक गठबंधनों में गिनी गई. इस तिकड़ी की अविस्मरणीय फिल्मों में बरसात, आवारा,आह, श्री 420, संगम, मेरा नाम जोकर, जिस देश में गंगा बहती है, जागते रहो, बूट पॉलिश जैसी महान फिल्में शामिल हैं. राज कपूर के अलावा अन्य फिल्मकारों के लिये भी इस जोड़ी ने दाग, पतिता, बसंत बहार, दिल एक मंदिर,गुमनाम, जंगली, आम्रपाली, सूरज, एन इवनिंग इन पेरिस, लव मैरिज, ब्रह्मचारी, अनाड़ी, दिल अपना और प्रीत पराई, सीमा, प्रोफेसर, उजाला, दीवाना, पहचान और बेईमान आदि फिल्मों में अविस्मरणीय संगीत रचा.

शंकर-जयकिशन का संगीत कई स्तरों पर अनूठा था

इन्होंने फ़िल्म संगीत की एक नई अनूठी शैली विकसित की, उनका संगीत भारतीय शास्त्रीय संगीत और पाश्चात्य वाद्ययंत्रों का एक अद्भुत मिश्रण था. उन्होंने बड़े पैमाने पर ऑर्केस्ट्रा का उपयोग किया, जो उस समय के हिसाब से एक नया प्रयोग था. भव्य ऑर्केस्ट्रेशन, वायलिन, अकॉर्डियन और पियानो का प्रभावी प्रयोग उनके संगीत की विशेषता थी, उनकी धुनें भारतीय शास्त्रीय संगीत और पश्चिमी संगीत का अनूठा मेल थीं, जिसमें 'भैरवी राग' और 'शिवरंजनी राग' का उपयोग अक्सर पाया गया, जहाँ शंकर राग 'भैरवी' के प्रेमी थे, वहीं जयकिशन राग 'शिवरंजनी' पर आधारित धुनें बनाने में माहिर थे, शंकर को शास्त्रीय संगीत और वाद्य-संयोजन में दक्षता प्राप्त थी, जबकि जयकिशन की पहचान मधुर, सरल और भावपूर्ण धुनों से थी. उनकी धुनें सुनने में सरल लगती हैं, पर उनमें भीतर गहरी रचनात्मकता छिपी होती है. रुमानी गीतों में माधुर्य, विरह गीतों में करुणा का भाव और लोकधर्मी गीतों में सरलता, हर भाव के लिए उनके पास संगीत था. शंकर जयकिशन को शैलेंद्र और हसरत जयपुरी जैसे महान गीतकारों का साथ मिला, जिसने उनके संगीत को वैचारिक और भावनात्मक ऊंचाई दी, इस जोड़ी ने हिंदी फिल्मों को एक से बढ़कर एक सदाबहार गीत दिए, 'बरसात में हम से मिले तुम' (बरसात), 'आवारा हूँ' (आवारा), 'मेरा जूता है जापानी', 'ये रात भीगी भी', 'प्यार हुआ इकरार हुआ' (श्री 420), जाने कहाँ गए वो दिन', 'जीना यहाँ मरना यहाँ', 'कहता है जोकर' (मेरा नाम जोकर), 'दोस्त दोस्त ना रहा', 'बोल राधा बोल संगम' (संगम)', 'होठों पे सच्चाई', 'ओ बसंती पवन पागल' (जिस देश में गंगा बहती है) 'किसी की मुस्कुराहटों पे हो निसार', 'तेरा जाना दिल के अरमानों का' (अनाड़ी), 'अजीब दास्तां है ये' (दिल अपना और प्रीत पराई), 'दिल एक मंदिर है', 'रुक जा रात ठहर जा' (दिल एक मंदिर),बहारों फूल बरसाओ (सूरज), ज़िंदगी एक सफर है सुहाना (अंदाज़), 'सजनवा बैरी हो गए हमार' (तीसरी कसम), 'दिल के झरोखे में तुझको' (ब्रह्मचारी) 'एहसान तेरा होगा मुझ पर' (जंगली), 'आज कल में ढल गया' (बेटी बेटे), 'तुम्हें याद करते करते' (आम्रपाली), 'दिल की गिरह खोल दो' (रात और दिन), 'झनक झनक तोरी बाजे' (मेरे हुज़ूर), 'तेरा मेरा प्यार अमर' (असली नकली) जैसे कालजयी गीत दिए.

शंकर और जयकिशन की जोड़ी ने 1949 से लेकर 1971 तक फ़िल्म संगीत की दुनिया पर राज किया, और अपने दो दशक के फ़िल्मी सफ़र में लगभग ढाई सौ फिल्मों को अपने संगीत से संवारा. एक समय ऐसा था उनकी धुनें फ़िल्म निर्माताओं के लिए सफलता की गारंटी बन गई थीं, उस दौर में वे एकमात्र ऐसे संगीतकार थे जो कभी कभी तो फिल्म के मुख्य अभिनेताओं से से भी ज्यादा फीस लेते थे, परन्तु 1960 के दशक के उत्तरार्ध में कुछ मतभेदों के चलते इस जोड़ी में दरार आई और फिर 1971 में जयकिशन के असामयिक निधन ने इस सुनहरे युग को समाप्त कर दिया.

शंकर जयकिशन सिर्फ संगीतकार नही थे,एक दौर थे,एक युग थे, शंकर जयकिशन ने हिंदी फिल्म संगीत को वैश्विक पहचान, भव्यता और भावनात्मक गरिमा प्रदान की.. उन्होंने सिद्ध किया कि लोकप्रिय संगीत भी कलात्मक स्तर का हो सकता है, उन्होंने धुनों को भावना, तकनीक और संस्कृति से जोड़कर ऐसा संगीत रचा, जिसने संगीतकारों की आगे आने वाली पीढ़ियों को भी प्रभावित किया, उनका संगीत सुनना आज भी एक भावनात्मक और सौंदर्यात्मक अनुभव है, उनकी अविस्मरणीय धुनें समय के पार जाकर आज भी उतनी ही नई और मधुर लगती हैं, जितनी अपने स्वर्णिम दौर में थीं, उन्होंने रिकॉर्ड 9 बार 'सर्वश्रेष्ठ संगीतकार' का फिल्मफेयर पुरस्कार जीता. इसी प्रकार भारत सरकार ने 1968 में उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया. डाक विभाग ने 1913 में उनकी स्मृति में एक डाक टिकट भी जारी किया. उनका योगदान हमेशा भारतीय सिनेमा के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में लिखा जायेगा. आज के लिये बस इतना ही,अगले हफ्ते फिर मुलाक़ात होगी, तब तक शंकर जयकिशन का ये यादगार गीत सुनिए और खुश रहिये, मस्त रहिये, मोटिवेटेड रहिये

किसी की मुस्कराहटों पर हो निसार
किसी का दर्द मिल सके तो ले उधार
किसी के वास्ते हो तेरे दिल में प्यार,
जीना इसी का नाम है..

कई बार कोई किरदार सिर्फ शो में वापस नहीं आता, बल्कि नए चेहरे, नई ऊर्जा और नए सफर के साथ लौटता है. सन नियो का लोकप्रिय शो 'प्रथाओं की ओढ़े चुनरी: बींदणी' एक

बार फिर दमदार किरदार रमकुड़ी को दर्शकों के सामने लाने जा रहा है. इस बार इस किरदार को अभिनेत्री सोनिया सिंह निभा रही हैं. हाल ही में सोनिया ने बताया कि पहले से लोगों के दिमाग में बसी पहचान वाले किरदार को निभाना आसान नहीं होता और इसके साथ कई जिम्मेदारियां भी जुड़ी होती हैं.

अपने किरदार के बारे में बात करते हुए अभिनेत्री सोनिया सिंह कहती हैं, 'जब यह शो मुझे ऑफर हुआ तो मैं बहुत खुश थी, लेकिन थोड़ी घबराई हुई भी थी, क्योंकि रमकुड़ी ऐसा किरदार है, जिसे दर्शक पहले से जानते हैं.

रमकुड़ी बनीं सोनिया सिंह

किसी मशहूर किरदार को निभाना बड़ी चुनौती होती है, इसलिए मेरे लिए रमकुड़ी को गहराई से समझना बहुत जरूरी था.

मैंने स्क्रिप्ट मिलने के बाद निर्देशक से कई सवाल किए और किरदार की बोलचाल, हाव-भाव, व्यवहार और भाषा को समझने की कोशिश की. यह मेरा पहला शो है जो राजस्थान की पृष्ठभूमि पर आधारित है, इसलिए इस किरदार को लेकर मेरी तैयारी बेहद मजबूत होनी जरूरी थी.'

एक्शन ड्रामा 'गांधारी' के लिए तापसी और कनिका की वापसी

कनिका ढिल्लों और तापसी पन्नू की सुपरहिट जोड़ी एक बार फिर बड़े पर्दे पर आग लगाने को तैयार है. हसीन दिलरुबा फ्रेंचाइज़ी की जबरदस्त सफलता के बाद, अभिनेत्री तापसी पन्नू और लेखिका-निर्माता कनिका ढिल्लों अपनी अगली बड़ी साझेदारी 'गांधारी' के साथ एक बार फिर लौट रही हैं, जो इस बार उन्हें एक दमदार और इंटेंस एक्शन की दुनिया में ले जाती है.

'गांधारी' इस क्रिएटिव पार्टनरशिप की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है. इससे पहले यह जोड़ी मनमरज़ियाँ, हसीन दिलरुबा, फिर आई हसीन दिलरुबा और रश्मि रॉकेट जैसी कल्ट फेवरेट और प्रशंसकों द्वारा खूब सराही गई फिल्मों के ज़रिए दर्शकों के दिल जीत चुकी है.

कनिका ढिल्लों के लिए 'गांधारी' बेहद खास है, क्योंकि यह उनके प्रोडक्शन बैनर कथा पिक्चर्स की दूसरी फिल्म है. उनकी डेब्यू प्रोडक्शन दो पत्ती, जो नेटफ्लिक्स पर सबसे ज्यादा देखी जाने वाली फिल्मों में शामिल रही, शानदार सफलता के बाद, कनिका लगातार महिला-केंद्रित, साहसी और दमदार कहानियों को आगे बढ़ा रही हैं. 'गांधारी' के साथ वे

मनोवैज्ञानिक रहस्य से आगे बढ़ते हुए एक हाई-इंटेंसिटी रिवेंज एक्शन ड्रामा की ओर कदम रखती है.

अपने हालिया किरदारों से हटकर, तापसी पन्नू ने 'गांधारी' के लिए जबरदस्त फिज़िकल ट्रांसफॉर्मेशन किया है. एक 'रिवेंज एक्शन-थ्रिलर' के रूप में पेश की जा रही यह फिल्म एक माँ और उसके बच्चे के बीच के गहरे, सुरक्षात्मक रिश्ते को बेहद उग्र और भावनात्मक अंदाज में दर्शाती है.

कनिका ढिल्लों ने कहा, 'तापसी और मेरे बीच हमेशा से एक ऐसा क्रिएटिव तालमेल रहा है, जो हमें सीमाएँ तोड़ने की आज़ादी देता है. 'गांधारी' में हम सिर्फ एक कहानी नहीं कह रहे हैं, बल्कि एक माँ के प्यार की उग्रता को ऐसे एक्शन के ज़रिए दिखा रहे हैं, जो हमारी पिछली फिल्मों से बिल्कुल अलग है.'

देवाशीष मखीजा द्वारा निर्देशित 'गांधारी', नेटफ्लिक्स पर एक बड़े ग्लोबल रिलीज़ के लिए तैयार है. हाई-ऑक्टेन एक्शन और गहरे इमोशनल स्टेक्स के साथ, यह फिल्म दर्शकों को एक दमदार और अलग सिनेमैटिक अनुभव देने का वादा करती है.

टेलीविजन हलचल

नाजुक पलों में गहराई लाने को लेकर अभिषेक ने जाहिर किए जज्बात!

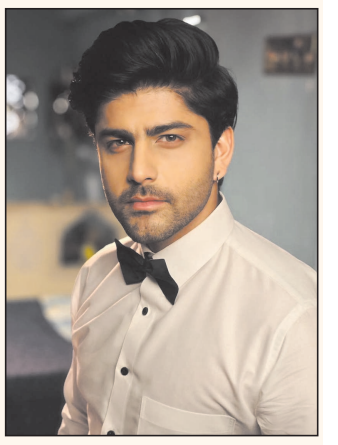

ज़ी टीवी 'मर्द को दर्द नहीं होता' जैसी सोच को तोड़ते हुए ऐसे मजबूत किरदार सामने ला रहा है, जो अपनी कमजोरी दिखाने से नहीं डरते. समाज में अब भी यह गलत सोच है कि 'असली मर्द' वही होता है जो कभी टूटे नहीं, हमेशा संभला रहे और अपनी बातें दिल में ही दबाए रखे. लेकिन जब बात परिवार की आती है, तो कई पुरुष यह दिखाते हैं कि मजबूती के साथ-साथ नरमी भी हो सकती है. ज़ी टीवी के शो 'वसुधा' में देव का किरदार निभा रहे अभिषेक शर्मा ने दर्शकों के दिलों को छुआ है, सिर्फ उसकी ताकत के लिए नहीं, बल्कि उस खामोश-सी नर्मी के लिए भी, जो उसके सफर को खास बनाती है. एक आम टीवी हीरो से अलग, अभिषेक देव को कई रंगों वाला, अंदर से जुड़ा हुआ और बिल्कुल इंसानी किरदार मानते हैं.

अपने किरदार को निभाने के तरीके पर बात करते हुए अभिषेक उन पलों का ज़िक्र करते हैं, जिनसे वो सबसे ज्यादा जुड़ाव महसूस करते हैं. वो कहते हैं, 'वो सीन जिसने मुझे सबसे ज्यादा छू लिया, तब आया जब चंद्रिका (परिणीता बोरठाकुर) देव से बात करना बंद कर देती है और देव किसी ऐसे इंसान को फोन करना चाहता है, जिससे वो दिल की बात कह सके. उस पल वो अपनी मां को कॉल करता है, जो उसके सामने ही बैठी होती है. उस सीन का असर इतना गहरा था कि शूट के दौरान मेरी आंखों में आंसू आ गए और शूट खत्म होते ही मैं सीधे ग्रीनरूम गया और अपने माता-पिता को फोन किया.' वो आगे कहते हैं, 'देव की खामोशी, उसके मन के अंदर चलने वाली उथल-पुथल और वो पल जब वो खुद को उलझा हुआ महसूस करता है, यही सब उसे असली बनाते हैं. करीब दो साल तक इस किरदार को निभाने के बाद अब मुझे लगता है कि अभिषेक और देव के बीच की दूरी बहुत कम हो गई है.' चाहे निजी नुकसान से जूझना हो, जिम्मेदारियों का बोझ उठाना हो या दिल की बात कह न पाना हो, देव की यही नरमी 'वसुधा' की कहानी को और असरदार बनाती है.

घरवाली पेड़वाली' में बढ़ेगा डबल ट्रबल

एण्डटीवी के सुपरनैचुरल हॉरर-कॉमेडी शो 'घरवाली पेड़वाली' में जीतू के किरदार से दर्शकों का दिल जीत रहे पारस अरोड़ा ने आने वाले एपिसोड्स में और भी बड़े ट्विस्ट्स का इशारा किया है. पांडे परिवार जहां एक तरफ रस्मों, रहस्यमयी खतरों और डरावने खुलासों से जूझ रहा है, वहीं जीतू इस पूरे तूफान का इमोशनल सेंटर बना हुआ है. तर्क और आस्था, प्यार और डर के बीच फंसे जीतू के किरदार को पारस अरोड़ा ने गहराई, मासूमियत और गर्मजोशी के साथ निभाया है. शो के मौजूदा हाई वोल्टेज ट्रैक, जीतू के इमोशनल सफर और सेट के मज़ेदार माहौल पर पारस अरोड़ा ने खुलकर बात की.

सवाल 1 : जीतू आस्था, डर और जिम्मेदारी के बीच फंसा है. इस किरदार को निभाने के लिए आपको किस चीज ने आकर्षित किया?

मुझे जीतू का सबसे मज़ेदार पहलू उसकी अनजाने में पैदा होने वाली कॉमेडी लगी. वो एक बिल्कुल सामान्य इंसान है, जिसे लॉजिक, रूटीन और शांति पसंद है, और अचानक वह सुपरनैचुरल हालात और फैमिली ड्रामे में फंस जाता है. यही टकराव कॉमेडी को जन्म देता है. जीतू इतना समझदार है कि उसे पता चल जाता है कि कुछ तो गड़बड़ है, इसलिए वह हर वक्त जुगाड़ करता रहता है, ताकि इस पागलपन से निकल सके. उसका यही जुगाड़ू स्वभाव उसे बहुत रिलेटेबल बनाता है. मुझे कॉमेडी करना हमेशा पसंद रहा है और जीतू में ह्यूमर रिएक्शन्स और सिचुएशन्स से आता है, न कि ज़बरदस्ती की पंचलाइन से. एक समस्या का समाधान होता नहीं कि दूसरा ट्विस्ट आ जाता है और यही है असली 'डबल ट्रबल'. डर, इमोशन और जिम्मेदारी के साथ कॉमेडी को बैलेंस करना चुनौतीपूर्ण जरूर है, लेकिन बेहद मज़ेदार भी.'

सवाल 2 : शो में अब रस्मों और चेतावनियों का असर बढ़ रहा है. जीतू इमोशनली कैसे बदला है?

जीतू अब पहले जैसा नहीं रहा. शुरुआत में वह हर चीज़ को हल्के में लेता था और पूरी तरह लॉजिक पर भरोसा करता था. लेकिन अब लगातार हो रही रस्में और चेतावनियां उसे अंदर से झकझोरने लगी हैं. वो कन्फ्यूज़ है, दबाव में है और धीरे-धीरे समझ रहा है कि हर चीज़ का जवाब तर्क से नहीं मिलता. बाहर से वो नॉर्मल दिखने की कोशिश करता है और परिवार को बचाना चाहता है, लेकिन उसके रिएक्शन्स में उसका डर साफ झलक जाता है. वहीं से छोटी-छोटी कॉमिक मोमेंट्स अपने आप निकल आते हैं. एक अभिनेता के तौर पर इस बदलाव को एक्सप्लोर करना मेरे लिए बहुत दिलचस्प रहा है.

शाहिद ने की 'फर्जी 2' पर काम शुरू होने की पुष्टि

फिल्म अभिनेता शाहिद कपूर ने आधिकारिक तौर पर पुष्टि कर दी है कि 'फ़र्ज़ी' के दूसरे भाग पर काम शुरू हो गया है. अभिनेता ने सोशल मीडिया के ज़रिये यह उत्साहजनक समाचार साझा किया है जिससे प्रशंसक बेहद प्रसन्न हैं.

शाहिद ने अपनी 'इंस्टाग्राम स्टोरी' पर राज निदिमोरु और कृष्णा डीके की प्रसिद्ध फिल्म निर्माता जोड़ी, राज और डीके, के साथ एक तस्वीर साझा की जिन्होंने इस श्रृंखला का निर्माण और निर्देशन किया है. तस्वीर के साथ उन्होंने लिखा, 'जालसाज़ फिर से काम पर लौट आए हैं,' जिससे यह स्पष्ट हो गया कि नए भाग पर काम शुरू हो चुका है. राज और डीके ने भी अपने इंस्टाग्राम खाते पर श्रृंखला की वापसी का संकेत दिया. नोटों की गड्डियों की एक तस्वीर साझा करते हुए उन्होंने लिखा, 'दूसरा दौर प्रगति पर है,' जो इस सफल श्रृंखला की वापसी का इशारा है.

शाहिद ने इससे पहले दूसरे भाग की समय-सीमा के बारे में बात करते हुए कहा था कि इस तरह के बड़े स्तर के निर्माण में समय लगता है. उन्होंने बताया था कि फिल्मांकन पूरा होने के बाद पोस्ट-प्रोडक्शन कार्यों में लगभग एक वर्ष का समय लगता है, जिसमें 200 देशों में प्रसारित करने से पहले श्रृंखला को 35-40 भाषाओं में डब करना शामिल है.

उनके अनुसार प्रशंसकों को दूसरे भाग को देखने के लिये कम से कम डेढ़ से दो साल का इंतज़ार करना पड़ सकता है. 'फ़र्ज़ी' में शाहिद कपूर, विजय सेतुपति, राशि खन्ना, केके मेनन, भुवन अरोड़ा, रेजिना कैसेंड्रा और अमोल पालेकर जैसे मंझे हुए कलाकार प्रमुख भूमिकाओं में है.

अलग तरह की प्रस्तुतियों के साथ नजर आएंगे अभिषेक बनर्जी

बॉलीवुड अभिनेता अभिषेक बनर्जी वर्ष 2026 में तीन बिल्कुल अलग तरह की प्रस्तुतियों के साथ दर्शकों के सामने आने वाले हैं. अभिषेक बनर्जी तमिल धारावाहिक लेगेसी, चर्चित एंथ्रोलॉजी सिरीज़ लस्ट स्टोरीज़ 3, और अभिनेता राजकुमार राव द्वारा निर्मित फिल्म टोस्टर में दिखाई देंगे.

अभिषेक के लिए यह वर्ष खास रहने वाला है. तमिल भाषा की सिरीज़ से लेकर रिश्तों पर आधारित साहसिक संकलन और एक अलग अंदाज़ की फिल्म तक, हर प्रोजेक्ट्स उन्हें एक नई रचनात्मक दुनिया में ले जाती है.

अभिषेक बनर्जी ने इस खास दौर के बारे में कहा, 'वर्ष 2026 मेरे लिए उन दुर्लभ वर्षों में से है जब अभिनय से जुड़ी मेरी पसंद की हर चीज़ एक साथ हो रही है. एक ही मंच पर तीन प्रोजेक्ट्स होना और फिर भी तीनों का एक-दूसरे से बिल्कुल अलग होना मेरे लिए बहुत खास है. लेगेसी मेरी पहली तमिल सिरीज़ है. अलग भाषा और अलग सांस्कृतिक माहौल में काम करना मेरे लिए नई सीख रहा. इससे मुझे समझ आया कि कहानी कहने का तरीका जगह और परिवेश के साथ बदल जाता है. इस अनुभव ने मुझे याद दिलाया कि मैंने अभिनय से प्यार क्यों किया था, क्योंकि यह आपको हर बार कुछ नया सीखने के लिए प्रेरित करता है.'

अभिषेक बनर्जी ने कहा, 'लस्ट स्टोरीज़ 3 एक ऐसी सिरीज़ का हिस्सा है जो रिश्तों और इच्छाओं पर ईमानदारी से बात करती है. इसमें काम करने का मतलब है लेखन और निर्देशक पर पूरा भरोसा रखना, क्योंकि ये कहानियाँ दिखावे से ज़्यादा भावनाओं की सच्चाई पर

आधारित होती हैं. इसमें चुप्पी, झिझक और कमजोरी जैसी बातों को समझने का मौका मिलता है. एक अभिनेता के लिए यह अनुभव डराने वाला भी है और आज़ादी देने वाला भी.'

अभिषेक बनर्जी ने फिल्म टोस्टर के बारे में कहा, 'यह प्रोजेक्ट मेरे लिए खास है, सिर्फ कहानी की वजह से नहीं बल्कि इसलिए भी कि इसे राजकुमार राव बना रहे हैं, जिन्हें मैं एक अभिनेता के रूप में बहुत मानता हूँ. इस फिल्म का अंदाज़ ऊपर से हल्का-फुल्का है, लेकिन भीतर गहरी भावनाएँ और बारीकियाँ छिपी हैं. ऐसी कहानियाँ दर्शकों के साथ लंबे समय तक रहती हैं, क्योंकि वे रोज़मर्रा की ज़िंदगी को ईमानदारी से दिखाती हैं. ऐसे किरदार का भरोसा मिलना मेरे लिए गर्व की बात है.

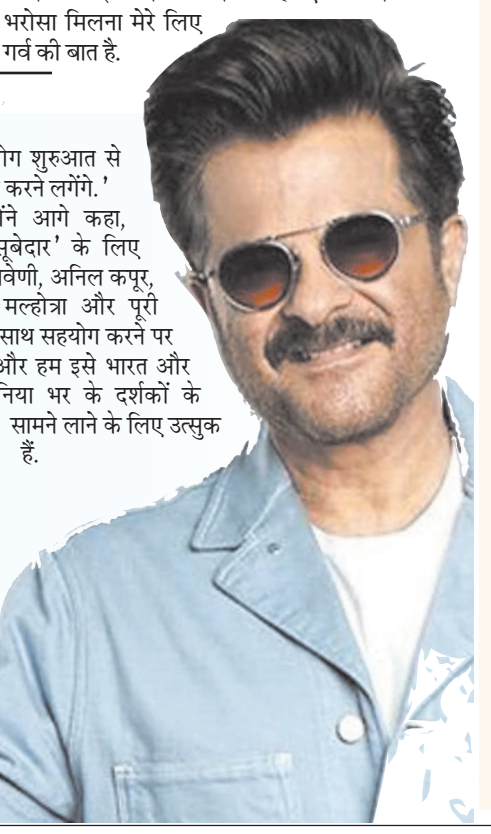

'सनम रे' के प्रदर्शन के 10 साल पूरे हुए

पुलकित सम्राट और यामी गौतम की फिल्म 'सनम रे' को रिलीज़ हुए दस साल पूरे हो गये हैं. रोमांटिक ड्रामा के रूप में पेश की गई फिल्म सनम रे का संगीत चार्टबस्टर बना था, जो आज भी प्लेलिस्ट का हिस्सा बना हुआ है, लेकिन इसकी असली ताकत थी मुख्य कलाकारों के बीच की सहज और बिना बनावट वाली केमिस्ट्री, जिसने इसे आज भी यादगार बनाए रखा है. पुलकित और यामी की जोड़ी ने पर्दे पर एक ऐसा जादू रचा था, जो 2016 में भी पुराने दौर की रोमांस की याद दिलाती थी. संगीत ने उनकी केमिस्ट्री को और उभारा, लेकिन उसे सच्चा बनाने का काम उनके अभिनय ने किया.

एक्शन-ड्रामा 'सूबेदार' का प्राइम वीडियो पर प्रदर्शन, टीजर रिलीज

प्राइम वीडियो ने अनिल कपूर (स्लमडॉग मिलियनेयर) और राधिका मदान (द मैन हू फील्स नो पेन) अभिनीत एक्शन-ड्रामा फिल्म 'सूबेदार' के वैश्विक प्रीमियर की घोषणा की है. साथ ही इस फिल्म का टीजर भी जारी किया है. 'तुम्हारी सुलु', 'जलसा' और 'दलदल' के लिए मशहूर सुरेश त्रिवेणी निर्देशित इस फिल्म का निर्माण विक्रम मल्होत्रा, अनिल कपूर और त्रिवेणी ने 'ओपनिंग इमेज फिल्म्स' के जरिये 'अनिल कपूर फिल्म एंड कम्युनिकेशन नेटवर्क' के सहयोग से किया है.

यह फिल्म 'सूबेदार अर्जुन मौर्य' की कहानी है, जो एक सेवानिवृत्त सैनिक है और एक ऐसी दुनिया में अपना रास्ता बना रहा है जहां उसके पारंपरिक मूल्य आधुनिक चुनौतियों से टकराते हैं. कपूर का किरदार पारिवारिक रिश्तों के तनाव को संभालते हुए अपराध और भ्रष्टाचार का सामना करता है. भारत के ग्रामीण परिवेश पर आधारित इस फिल्म को सामाजिक पतन के बीच सम्मान की एक सिनेमाई, साहसी और गहन खोज के रूप में वर्णित किया गया है.

फिल्म की पटकथा त्रिवेणी और प्रज्वल चंद्रशेखर ने लिखी है. सहायक कलाकारों में सौरभ शुक्ला, आदित्य रावल, फैसल मलिक और मोना सिंह हैं.

वेरायटी के अनुसार, प्राइम वीडियो इंडिया के 'निर्देशक और ओरिजिनल्स प्रमुख' निखिल मधोक ने कहा, ''सूबेदार' एक रोमांचक और जोश से भरी एक्शन फिल्म होने के साथ-साथ पिता-पुत्री की बेहद भावुक कहानी भी है. इसमें अनिल कपूर का जबरदस्त प्रदर्शन है, जो एक ऐसे एक्शन हीरो की भूमिका निभा रहे हैं, जिसे लोग शुरुआत से ही पसंद करने लगेंगे.'

उन्होंने आगे कहा, 'हमें 'सूबेदार' के लिए सुरेश त्रिवेणी, अनिल कपूर, विक्रम मल्होत्रा और पूरी टीम के साथ सहयोग करने पर गर्व है और हम इसे भारत और दुनिया भर के दर्शकों के सामने लाने के लिए उत्सुक हैं.